CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का जीवन मूल्यों पर प्रभाव

वंदना शर्मा, *शोधार्थी*
डॉ. मौसम पारीक, *सहायक आचार्य*
शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

First draft received: 26.11.2023, Reviewed: 19.12.2023, Accepted: 23.12.2023, Final proof received: 29.12.2023

सार-संक्षेप

शिक्षा का सार्वभौमिक उद्देश्य है नैतिकता का विकास। प्राचीन व मध्ययुगीन भारत में धर्म, संस्कृति व शिक्षा परस्पर एक-दूसरे के पर्याय रहे हैं। अतः इस सार्वभौमिक उद्देश्य की प्राप्ति होती रही। प्रत्येक समाज के कुछ नियम तथा आदर्श होते हैं, जिनका पालन करना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक माना जाता है। ये नियम तथा आदर्श नैतिक शिक्षा का ही भाग है। नैतिक शिक्षा व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करती है। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है हमारे जीवन मूल्य। प्रस्तुत शोध में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्र में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है, क्योंकि छात्राध्यापक राष्ट्र निर्माता है तथा नैतिकता समयकाल व परिस्थिति की आदर्श उपज होती है जिसका पालन समाज करता है। शिक्षा समाज का आईना होती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति को ज्ञात कर उत्कृष्ट राष्ट्र का पोषक बन सकता है।

मुख्य शब्द : *प्रशिक्षणार्थी, अध्यापक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, जीवन मूल्य, राष्ट्र-निर्माण आदि.*

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के समग्र विकास के लिए उसके विभिन्न ज्ञान तंतुओं को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा लोगों में आत्मसात करने, ग्रहण करने, रचनात्मक कार्य करने, दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग देने की भावना का विकास होता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को परिपक्व बनाना है। वर्तमान समय में व्यक्तियों में जीवन मूल्यों के प्रति उत्तरदायित्व में कमी आई है जिसके कारण समाज में विभिन्न प्रकार के अनाचार व व्यभिचार फैल गया है। मानवीय संबंध संवेदनहीन हो गये हैं, जिससे समाज में नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। यदि राष्ट्र निर्माता में भी जीवन मूल्यों का अभाव या पतन निरन्तर जारी रहा तो समाज में अराजकता व विघटन की स्थिति अधिक विकट हो जायेगी। यूँ तो आधुनिकता के दौर में हम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी आगे निकल गए हैं परन्तु इस अंधी दौड़ में हमारे समाज की मूल्य प्रणाली में उल्लेखनीय गिरावट आयी है। आज का छात्राध्यापक भावी राष्ट्र का निर्माता है। इस भावी राष्ट्र निर्माता में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम की नैतिक शिक्षा द्वारा विकसित जीवन मूल्य प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे से अलग होने में मदद करते हैं और इसी वजह से व्यक्ति अपनी आत्मनिष्ठ पहचान का निर्माण करते हैं। आज वैश्विक परिवेश पहचान के संकट से गुजर रहा है। एवम् जीवन मूल्यों तथा नैतिकता का स्थान गौण हो गया है। ऐसी परिस्थिति में छात्राध्यापकों का दायित्व अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वे भविष्य निर्माता है और यदि इनके अंदर नैतिक शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों का समावेश कर दिया जाये तो मानवीय संवेदनाएँ जीवित रहेगी, इनका अंत नहीं होगा।

नीतिशास्त्र की उक्ति है – ''ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः।'' अर्थात् ज्ञान से हीन मनुष्य पशु के तुल्य है और ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा या विद्या से होती है। शिक्षा की प्रक्रिया युग सापेक्ष होती है। युग की गति और उसके नए–नए परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरूप भी बदल जाता है। यह मानव इतिहास की सच्चाई है। मानव के विकास के लिए खुलते नित–नये आयाम शिक्षा और शिक्षाविदों के लिए चुनौती का कार्य करते हैं जिसके अनुरूप ही शिक्षा की नयी परिवर्तित – परिवर्धित रूपरेखा की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता बनाए रखने के साथ ही साथ शिक्षार्थी को नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित कर आत्मसंयम, इन्द्रिय– निग्रह, प्रलोभनोपेक्षा तथा जीवन मूल्यों का केन्द्र बनाकर भारतीय समाज, अंतर्राष्ट्रीय जगत की सुख–शान्ति और समृद्धि का माध्यम तथा साधक बने। शिक्षार्थी के जीवन में मूल्य परक उच्च शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जीवन मूल्यों युक्त नैतिक शिक्षा लोगों को एक अवसर प्रदान करती है। शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम एक ऐसी कड़ी है जो भावी शिक्षकों रूपी राष्ट्र निर्माताओं के अंदर नैतिक मूल्यों का संचार करता है और उन्हें नित्य नये–नये अवसर प्रदान करता है। इन प्रशिक्षणार्थियों में नैतिक शिक्षा के माध्यम से नैतिकता के बीज बोकर भारत के स्वस्थ नागरिक बना कल्याणकारी राष्ट्र के निर्माण हेतु तैयार करते हैं। नैतिक शिक्षा व जीवन मूल्य में विशेष संबंध है। वह नैतिक शिक्षा किस प्रकार छात्राध्यापकों के जीवन मूल्यों को प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध में इसी पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। नैतिक शिक्षा उन मूल्यों और दिशा निर्देशों का अध्ययन है जिनके द्वारा हम अपना जीवन व्यतीत करते है। यह नैतिक शिक्षा जीवन मूल्यों का आधार है व नैतिक निर्णयों के बारे में दार्शनिक सोच है।

साहित्य की समीक्षा

- **मंडलोई, (2015).** ने ''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता, चुनौतियाँ एवं समाधान पर अध्ययन'' किया और पाया कि शैक्षणिक संस्थाओं में नैतिक शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए।
- **असवाल, (2017).** ने ''मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्त्व एवं आवश्यकता'' पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि मूल्यों से अभिप्रेरणा को दिशा मिलती है एवं मूल्य हमारे जीवन को आनन्दमय सुखदायी बनाने में अतुलनीय भूमिका निभाते हैं।
- **सिंघल एवं खमारी (2020).** ने ''बी.एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन'' किया और पाया कि व्यक्तित्व निर्माण में व्यक्तिगत मूल्यों की अहम भूमिका होती है।

- **सिंह, आरती. (2022).** ने ''श्री साईं साहित्य में निहित नैतिक शिक्षा एवम् आधुनिक मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता'' पर शोध किया और पाया कि नैतिक शिक्षा युक्त साहित्य व्यक्ति का चारित्रिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास करता है।

समस्या कथन

अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का जीवन मूल्यों पर प्रभाव।

अध्ययन के उद्देश्य

- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरूष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध की प्रकृति एवं उद्देश्यों के आधार पर सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त चर

- स्वतंत्र चर – नैतिक शिक्षा
- आश्रित चर – जीवन मूल्य

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के डी.एल.एड. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। इस शोध में 200 प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों के जीवन मूल्यों पर नैतिक शिक्षा द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित मापनी ''जीवन मूल्यों पर नैतिक शिक्षा का प्रभाव मापनी'' का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु आंकड़ों का सारणीयन व व्यवस्थापन किया जाता है। सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है – उसके पश्चात् सामग्री की विश्लेषण की व्याख्या की जाती है। उपकरण के प्रशासन से प्राप्त आंकड़ों को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका विश्लेषण माध्य, मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात की गणना कर किया गया तथा दण्ड आरेख द्वारा आंकड़ों को प्रदर्शित कर, व्याख्या की गयी।

आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या –

उद्देश्य –1 ''अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।'' के अंतर्गत परिकल्पित परिकल्पना –

परिकल्पना – 1 ''अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।'' का सत्यापन क्रांतिक अनुपात ;ब्द्ध की मदद से किया गया है जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को सारणी क्रमांक 1 में दर्शाया गया है –

सारणी क्रमांक – 1

शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रदत्तों के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

क्र.	प्रशिक्षणार्थ	न्यादश	मध्यमा	मानक विचल	क्रान्तिक	सार्थकत	सार्थक
सं.	र्ी	f	न	न	अनुपात	ा स्तर	ता
	शहरी	100	114.91	24.78	0.636	0.05 पर 1.97 0.01 पर 2.60	सार्थक अंतर नहीं परिकल्पना स्वीकृत
	ग्रामीण	100	117.20	26.15			

df = N_1+N_2 -2 = 100+100-2 = 198

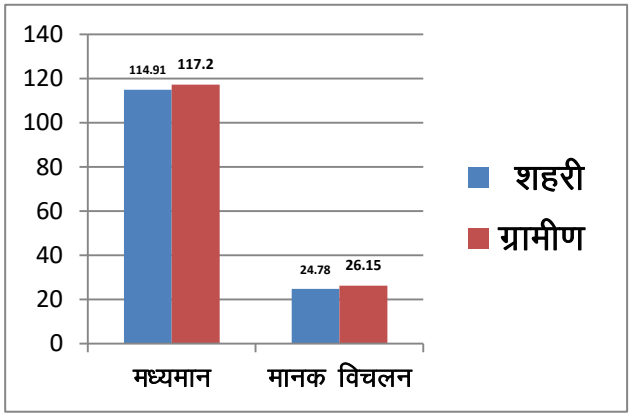

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात 0.636 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर के क्रांतिक अनुपात के कत्रि198 पर क्रमशः 1.97 व 2.60 से कम है अर्थात् दोनों समूह के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उसके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर नहीं पाया जाता है।

उद्देश्य –2 ''अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरूष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।'' के अंतर्गत परिकल्पित परिकल्पना –

परिकल्पना – 2 ''अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।'' का सत्यापन क्रांतिक अनुपात की मदद से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को सारणी क्रमांक –2 में दर्शाया गया है –

सारणी क्रमांक –2

महिला व पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रदत्तों के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

क्र. सं.	प्रशिक्षणार्थी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	सार्थकता
	पुरूष	100	38.73	6.76	8.26	0.05 पर 1.98 0.01 पर 2.60	सार्थक अंतर है। परिकल्पना अस्वीकृत
	महिला	100	30.29	7.67			

df = N_1+N_2 -2 = 100+100-2 = 198

विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 2 में प्रदर्शित क्रान्तिक अनुपात 8.26 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर के क्रांतिक अनुपात के कत्रि198 पर क्रमशः 1.98 व 2.60 से अधिक है अर्थात् दोनों समूह के

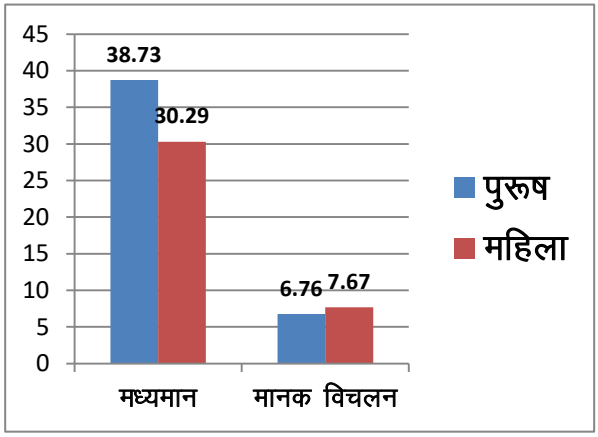

मध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उसके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर पाया जाता है। अर्थात् महिला प्रशिक्षणार्थियों के जीवन मूल्यों पर नैतिक शिक्षा का अधिक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर नहीं पाया जाता है।
- अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में अध्ययनरत महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की नैतिक शिक्षा का उनके जीवन मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर पाया जाता है। अर्थात् महिला प्रशिक्षणार्थियों के जीवन मूल्यों पर नैतिक शिक्षा का प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

- अस्थाना, विपिन, श्रीवास्तव विजया, अस्थाना, निधि, (2012–13), ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- भारद्वाज, इन्दिरा.(2017). ''मूल्य शिक्षा एवं नैतिक प्रवृत्तियाँ'' राखी प्रकाशन, आगरा।
- गुप्ता, चन्द्र रिद्धि (2017). अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता विकास हेतु नैतिक मूल्यों का समावेश पर अध्ययन, नेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड इन्नोवेटिव प्रैक्टिस, वॉल्यूम – 2, इश्यू – 11
- जैन, अनिल कुमार (2017). मनोवैज्ञानिक शोध विधियाँ, कोटा : वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।
- श्रवनतदंस वि म्उमतहपदह ज्मबीदवसवहपमे ंदक प्ददवअंजपअम त्मेमंतबी अवस.6 प्नम. 5ए डंल 2019
- के.सी. मलैया. ''नैतिक शिक्षा का शिक्षण'' मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
- मंगल, डॉ. अंशु, बरौलिया, डॉ.ए. अग्रवाल श्रीमती नीतू एवं दुबे, श्रीकृष्ण. (2011). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. लि.।
- नागदा, उदयलाल एवं मीणा, रतनलाल (2016). संस्कृत विषय पढ़ने वाले विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का अध्ययन, इण्टरनेशल रिसर्च जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज, वॉल्यूम –1 इश्यू –16
- पंड्या, शकुन्तला. (2011). ''विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की प्रेरक विधाएँ'' जयपुर : राजस्थान प्रकाशन।
- सक्सेना, एन.आर., मिश्रा बी.के., मोहन्ती, आर.के. (2016), ''अध्यापक शिक्षा'', आर. लाल बुक डिपो।
- शर्मा, आर.ए. (2016) ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- शर्मा, डॉ. हनुमानसहाय, रामेटा, डॉ. रंजना, वैद, श्रीमती सपना, देवपुरा, श्रीमती विभा, मेनारिया, श्रीमती लक्ष्मी. ''विद्यालयी संस्कृति, प्रबन्धन और शिक्षक'' अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
- शिक्षा की चुनौती– नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 1985
- शुक्ल, हिमांशु एवं शुक्ला, प्रभात (2015). प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास एवं पारिवारिक वातावरण का अध्ययन, एशियन ग्लोबल रिसर्च (एन इण्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल) वॉल्यूम –2 इश्यू –5
- त्रिपाठी, जयगोपाल. (2013). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध पद्धतियाँ, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
- विकल, जे.के. (2017). ने मूल्यनिष्ठ शिक्षा : वर्तमान आवश्यकता एवं भावी सम्भावना, डी.वी. एस. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, वॉल्यूम – 3 इश्यू – 9